Perfectionism (आत्मपूर्णतावाद) —

बाह्यनियमवाद बाह्यनियमों (External laws) को चरम आदर्श मानता है। सुखवाद व्यक्ति की भावना को प्रधानता देते हुए सुख की प्राप्ति को ही चरमलक्ष्य मानता है। बुद्धिवाद व्यक्ति के विवेक (Reason) पर विशेष ध्यान देते हुए बुद्धि के उपदेशों को ही चरम लक्ष्य मानता है। उपर्युक्त तीनों सिद्धांत दोषपूर्ण हैं। बाह्यनियमवाद नैतिकता के आदर्श को बाहर से बलपूर्वक व्यक्ति पर लादता है और इसलिए संतोषप्रद सिद्धांत नहीं बन पाता। व्यक्तित्व के दो पहलू हैं - भावना और विवेक। सुखवाद केवल भावना को अपनाता है और विवेक की उपेक्षा करता है। इसी प्रकार बुद्धिवाद विवेक को अपनाकर भावना को ठुकरा देता है, इसलिए सुखवाद और बुद्धिवादी एकांगी (One-sided) सिद्धांत बन जाते हैं। इनके आधार पर नैतिकता का चरम आदर्श निर्धारित नहीं किया जा सकता।

मनुष्य की भावना अंधी होती है और उसकी भावना में विवेक कठोर होता है। इन दोनों अंगों को समुचित महत्व देना आवश्यक है। इन दोनों अंगों के विकास का अर्थ संपूर्ण 'स्व' (Self) का विकास है। आत्मपूर्णतावाद इसी

आवश्यकता की पूर्ति करता है। यह "वह नैतिक सिद्धांत है" जिसके अनुसार आत्मोन्नति, आत्मविकास और आत्मलाभ अथवा आत्मसाक्षात्कार (Self-realisation) ही जीवन का चरम लक्ष्य है (Ultimate Aim)।" पी० बी० नटजी के शब्दों में, "यह सिद्धांत इसलिए आत्म-पूर्णतावाद कहलाता है; क्योंकि यह अपने प्रयत्न से आत्मिक पूर्णता के आदर्श को स्वीकार करता है।" अरस्तु भी मानते हैं कि "मनुष्य पशु है, किन्तु वह विवेकशील पशु है और उसका कल्याण उसकी विवेकमय और आदर्शमय प्रकृति की पूर्णता में निहित है।" अरबन का भी कथन है कि "मनुष्य का कल्याण अथवा मूल्य उसके क्रियाकलापों की पूर्णता में है, किन्तु ये क्रियाकलाप केवल शारीरिक नहीं है, बल्कि बौद्धिक, चेतन तथा आदर्शमय भी है।